'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ९६ | वाराणसी, मंगलवार, २५ अगस्त, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

श्रीनगर (कश्मीर) ३-८-'५९

रूहानियत और ब्रह्मविद्या से ही समस्याओं का हल होगा

सबका दिल खुला

मुझे बड़ी खुशी हुई कि श्रीनगर में बहुत-सी जमातों से खुले दिल से बातें हुईं। यह मेरी खुशनसीबी है कि जिन-जिन लोगों ने मुझसे बातें कीं, दिल खोलकर कीं और किसीने भी अपनी कोई चीज मुझसे छिपायी नहीं। जिसके जी में जो था, कह ही डाला। यह उनके लिए एक बड़ी फायदे की बात थी, मेरे लिए भी थी सारे समाज के लिए भी थी। अक्सर सियासत में फँसे लोग ऊँचे भी होते हैं। उनके दिमाग खुले (फ्री) भी होते हैं। लेकिन लोगों के सामने अपनी बात रखने में वे हिचकते हैं। कुल हिंदुस्तान में मेरा यही तजुरबा रहा है कि जो-जो मुझसे मिलने आये, उन्होंने बिना किसी झिझक के मेरे सामने अपनी बातें रखीं। यहाँपर इस तरह बातें हुईं, जिससे मुझे बड़ा फायदा हुआ। अवाम का दिल (माइंड) किधर जा रहा है, यह सब समझने में बड़ी मदद हुई।

आज मैं जो बात आपके सामने रखने जा रहा हूँ, वह बहुत ही बुनियादी चीज है। सर्वोदय-विचार के खयाल से तो बुनियादी है ही, लेकिन कुल दुनिया की जिंदगी के खयाल से भी बुनियादी है। २-४ साल से मेरा उसपर चिंतन चला है।

आज तक का मन की भूमिका पर चिंतन

आज तक जितना 'पॉलिटिक्स' चला, समाज-रचना की जितनी कोशिशें की गयीं, जितने तरह-तरह के इन्किलाब आये, लाये गये, लाने की कोशिश की गयी, वे सब दूसरे ही उसूल पर थे और वे उसूल आज कतई चलनेवाले नहीं हैं, यह बात मेरे दिल में पक्की बैठ गयी है। अब तक जो चिंतन चला, सारा 'मेंटल लेवल' (मन की भूमिका) पर चला। उससे ऊपर उठने की बात अगर किसीने की तो शख्सी (व्यक्तिगत) तौर पर अनफरदा (अकेले) की। लेकिन हम जहाँ एक समाज के तौर पर सोचने बैठते हैं तो या तो माली, इक्तसादी हालत के बारे में सोचते हैं, जो एक नीचे-वाला पहलू है या उसके ऊपर उठकर सोचते हैं तो मन की भूमिका में सोचते हैं, जिसमें सारी 'साइकॉलॉजी' (मानस-शास्त्र) आती है और मन से मन टकराते हैं।

कश्मीर का मसला और रायशुमारी

आज रायशुमारी [कश्मीर में एक राजनैतिक पक्ष है, 'प्लेबि-साइट फ्रंट', जो चाहता है कि कश्मीर का मसला रायशुमारी से (प्लेबिसाइट) से हल हो याने जनता से पूछा जाय कि वह हिंदुस्तान या पाकिस्तान, दोनों में से क्या चाहती है।] चाहने-वाले भाई हमसे मिलने आये थे। मैंने उनसे कहा कि तुम लकीर के फकीर मत बनो ! जरा सोचो तो क्या 'मेजॉरिटी वोट' (बहुमत) लेना और उसे माइनॉरिटी (अल्पमत) पर लादना, यह बात दुनिया में चलेगी ? आज दुनिया में कोई भी मसला छोटा नहीं रहता है, बड़ा रूप लेता है। इसलिए 'वर्ल्ड वाइड आस्पेक्ट' (सारी दुनिया की दृष्टि) से सोचो। मेरे पाँव में फोड़ा है तो वह पाँव का ही नहीं, कुल जिस्म का है। इसमें सिर्फ पाँव को ही 'इंटरेस्ट' (दिलचस्पी) नहीं, सारे जिस्म को है। एक छोटी-सी बात है। हम यहाँ कश्मीर-वैली में बैठे हैं। एक बाजू से उसका संबंध हिंदुस्तान से है, दूसरी बाजू में पाकिस्तान, तीसरी बाजू में अफगानिस्तान, फिर उधर चीन और रूस से भी है और अमेरिका से भी है। जहाँ वह दीखती नहीं, वहाँ, पाकिस्तान में अमेरिका पड़ी है। इस तरह छह मुल्क इसमें बिलकुल 'डायरेक्टली कन्सर्न्ड' हैं, उनका इससे सीधा ताल्लुक है। अभी तिब्बत पर चीन का एक तरह से हमला हुआ तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान में सबको सदमा पहुँचा, सिवाय उनके कि जिन्होंने अपने खयालात दूसरे बनाये हैं। लेकिन हम चीन की बाजू से देखें तो पता चलेगा कि हमारा 'माइंड' (मन) एक तरह से काम कर रहा है तो उनका दूसरी तरह से। आज मैं ऐसी बातें रखनेवाला हूँ कि जिनसे काफी गलतफहमी हो सकती है। लेकिन गलतफहमी के डर से मैं अपनी

बातें रखने से डरता नहीं हूँ। हम जरा सोचें कि चीन का मन किस तरह काम कर रहा है। चीनवाले सोचते होंगे कि नेपाल एक अलग स्टेट है, जहाँ अमेरिका का प्रवेश हो जाय तो हमारी 'बॉर्डर' (सीमा) पर खतरा हो जायगा। इसलिए 'डिफेन्स' (रक्षण) के लिए यह जरूरी है कि अपनी 'बॉर्डर' (सीमा) कस ली जाय। इस तरह विचार का यह एक पहलू है। इसलिए तिब्बत में अन्याय हुआ है, यही नहीं मानना चाहिए। उसकी दूसरी भी बाजू है, जिसपर सोचना चाहिए।

विज्ञान-युग में तटस्थ चिंतन आवश्यक

इसीलिए अपने 'माइंड' (मन) से ऊपर उठकर हम सोचेंगे, 'सुप्रामेंटल लेवल' (अतिमानस भूमिका) पर सोचेंगे, तभी दुनिया के मसले हल हो सकेंगे। नहीं तो नहीं होंगे। हम मन की भूमिका पर सोचते रहेंगे तो टक्कर ही होगी। मेरा मन आपके मन से टकरायेगा। यह 'माइंड' (मन) कैसे बनता है, जरा सोचना होगा। उसके पीछे तवारीख (इतिहास) लगी हुई रहती है। मैं कहता हूँ, क्या यह कंबख्त तवारीख हमें बाँधने के लिए है या मदद पहुँचाने के लिए? तवारीख एक जंजीर, बेड़ी बन जाय और हमारा चिंतन महदूद करे तो खतरा है। इसलिए आज तक जो हुआ, उसे अलग रखकर 'ऑब्जेक्टिवली' (तटस्थता से) सोचना होगा और विज्ञान के जमाने में जिस तरह से सोचना जरूरी है, उस तरह से सोचना होगा।

कश्मीर केवल हमारा ही नहीं, सारे विश्व का है

कश्मीर का मसला लीजिये। कुछ भाइयों ने हमसे कहा कि कश्मीर हमारा है, हमारे बाप का है। मैंने कहा कि कश्मीर आपके बाप का था, लेकिन आपका नहीं है। मेरे बाप के जमाने में हिन्दुस्तान मेरे बाप का था, लेकिन मेरा नहीं है। चीनवालों के बाप के जमाने में चीन उनका था, लेकिन आज चीन उनका नहीं है। आज चीन, हिंदुस्तान, कश्मीर, हर देश दुनिया का है। यह हम जितना जल्दी समझेंगे, उतने जल्दी हमारे मसले हल होंगे। फिर उन मसलों का स्वरूप ही बदलेगा। हमारी नजर से देखने से जो रूप दीखता है, बड़ी नजर से वह नहीं दीखता, बल्कि दूसरा ही दीखता है। एक छोटा-सा कीड़ा मेरे पाँव के अंगूठे के नाखून पर बैठा है। उसे क्या मालूम कि यह बाबा नाम का एक जानदार प्राणी है। उसके पास कितनी ताकतें पड़ी हैं। उसके एक हिस्से पर, जिसे 'नाखून' कहते हैं, मैं बैठा हूँ। वह कीड़ा सिर्फ नाखून को जानता है। उससे ज्यादा इल्म उसे नहीं है। उसी तरह से हम छोटे दिमाग से देखते हैं तो किसी चीज का जो रूप और रंग दीखता है, अगर हम सारी दुनिया की 'सेटिंग' (पटल) में देखेंगे तो रूप बिलकुल ही बदला हुआ दीखेगा।

मन की भूमिका से मसले हल नहीं होंगे

इसलिए पुरानी सारी किताबें, मजहब, जबानें, 'रेस' (वंश), सूबे आदि सारी छोटी-छोटी चीजें भूलकर सोचें। हम उन सबसे अलग हैं। हम विश्वमानव हैं। ऋग्वेद में, जो कि दस हजार साल का पुराना ग्रन्थ है, यह लफ्ज आया है—"विश्वमानुषः" याने कुल दुनिया के इन्सान एक हैं। हम किसी एक जगह के नहीं, बल्कि कुल दुनिया के हैं। उसी निगाह से हमें सोचना होगा। आपका और हमारा 'माइंड' किस तरह बना है, यह जरा देखें। मैं बचपन में किसी एक परिवार में पला हूँ, जहाँ मैंने संस्कृत सीखी है। कुछ किताबें बार-बार पढ़ी हैं। उन सबका मुझपर असर है, जिससे मन बनता है। यह ठीक है कि मैंने दूसरी जबानें सीखी हैं। सब धर्मों के धर्मग्रन्थ पढ़े हैं। इसलिए मुझे अपने मन को वसी (विशाल) बनाने का मौका मिला है। लेकिन जिसे ऐसा मौका नहीं मिला, वह अपने बने हुए मन से दुनिया के मसले पर सोचेगा तो हरगिज उन्हें हल नहीं कर सकेगा।

मसले हल नहीं हो रहे हैं

आज विज्ञान का जमाना है। वैसे विज्ञान तो कदीम जमाने से चला आया है और धीरे-धीरे बढ़ता गया है। पुराने जमाने में इन्सान ने जब आग की खोज की, तब वह बहुत बड़ी खोज थी। इसीलिए उस वक्त अग्नि को देवता समझकर उसके गाने गाये गये। वह एक बड़ी भारी ईजाद थी। इस तरह विज्ञान विकसित होता गया। लेकिन इन दस-बारह साल में विज्ञान की जितनी तरक्की हुई है, उतनी उसके पहले दस हजार साल में भी नहीं हुई थी। इस बात को हमें समझना चाहिए। हिरोशिमा पर जो एटम बम गिराया गया, उस एक बम से जापान टिक नहीं सका और उसे शरण जाना पड़ा। लेकिन उस बम से हजार गुना ताकतवाले बम की आज खोज हुई है। इस हालत में आज देश के और दुनिया के छोटे-छोटे मसले हल नहीं होते हैं, उसका क्या कारण है? पुराने मसले कायम ही हैं और नये पैदा हो रहे हैं। उधर चीन है, जिसके पास अब अमेरिका आ बैठा है (फार्मोसा में)। उसका सवाल पड़ा ही है। गोवा, इराक, ईजिप्त, अल्जीरिया, इनमें से क्या कोई सवाल हल हुआ है? पुराने सवाल 'इन सस्पेंड' (लटकते) ही रहते हैं। उन्हें आगे ढकेला जाता है। फिर-फिर से कमेटियाँ बनती हैं। उनकी मीटिंगें होती हैं, बहस चलती है और कागजात का ढेर लग जाता है! 'वर्ल्ड वार' (विश्व-युद्ध) कोई भी नहीं चाहता है, क्योंकि उसमें इन्सान और इन्सानियत को बड़ा भारी खतरा है। उसे टालने की कोशिश चलती है। इसलिए छोटे-छोटे मसलों पर 'वर्ल्ड सिच्युएशन' (जागतिक परिस्थिति) में सोचा जाता है और उन्हें दूर ढकेला जाता है। इन सब मसलों का हल कब होगा?

विश्व-संतुलन से समस्याएँ हल होंगी

मैं कहना चाहता हूँ कि इन सब मसलों का हल 'वर्ल्ड वार' (विश्व-युद्ध) से होगा या 'वर्ल्ड अडजस्टमेंट' से? या तो लड़ाई होगी और कुल दुनिया का खात्मा होगा, कुल मसले हल होंगे या एक दिन ऐसा आयेगा, जब सबके मन ऐसे बनेंगे कि कुल दुनिया के मसले एक ही दिन में हल होंगे। उसके लिए मैं एक मिसाल देता हूँ। हिन्दुस्तान ने आजादी के लिए बहुत

कोशिश की, इसलिए हमें आजादी हासिल हुई। लेकिन बर्मा ने,सिलोन ने आजादी के लिए क्या कोशिश की थी ? जिन्होंने खास कोशिश नहीं की थी, उन्हें भी आजादी हासिल हुई। एक ऐसा माहौल पैदा हुआ कि हिन्दुस्तान के साथ दूसरे भी २-४ देशों को आजादी मिल ही गयी। याने एक 'वर्ल्ड सिच्युएशन' (जागतिक परिस्थिति) बनती है और काम होते हैं। उसी तरह इसके आगे 'इन सस्पेन्स' (लटकनेवाले) सवाल कुल के कुल एक दिन में हल होंगे। वह तब होगा, जब हम मन के ऊपर उठेंगे और 'सुप्रामेंटल लेवल' (अतिमानस भूमिका) पर जाकर सोचेंगे।

आणविक अस्त्र अहिंसा के नजदीक हैं

मैंने कई कफा कहा है कि मुझे 'वर्ल्ड वार' (विश्व-युद्ध) का डर कभी भी नहीं मालूम होता है। बहुत से लोग 'वर्ल्ड वार' को टालने की कोशिश करते हैं। बहुत से लोग कोशिश करते हैं कि 'न्युक्लिअर वेपन्स' (आणविक अस्त्र) का उपयोग हो, उनके प्रयोग न हों, लेकिन मुझे 'न्युक्लिअर वेपन्स' का उतना डर नहीं मालूम होता है, जितना 'कन्वेन्शनल वेपन्स' (मामूली अस्त्र) का मालूम होता है। मैं मानता हूँ कि जब तक आपके खंजीर, तलवार, बन्दूक, ये सारे चलेंगे, तब तक अहिंसा नहीं पनपेगी। लेकिन 'न्युक्लिअर वेपन्स' और अहिंसा बिलकुल नजदीक है। जैसे वर्तुल के दो सिरे बिलकुल नजदीक भी होते हैं और सबसे ज्यादा दूर भी होते हैं। उसी तरह 'एटॉमिक वेपन्स' अहिंसा के बिलकुल नजदीक भी हैं। उन्हें विकसित होना है तो होने दो। 'वर्ल्ड वार' (विश्व-युद्ध) को मैं कहता हूँ कि तू आ जा, तू मेरे लिए जगह देनेवाला है। याने तेरे बाद दुनिया को अहिंसा के सिवाय गति ही नहीं है। लेकिन ये जो छोटे-छोटे औजार हैं, लाठी, तलवार, स्टेनगन, पिस्तौल ये सारे खतरनाक हैं। जब तक ये जारी रहेंगे, तब तक अहिंसा को सामने आने का मौका ही नहीं मिलेगा। लेकिन आज 'न्युक्लिअर वेपन्स' ने आपके मामूली 'वेपन्स' (शस्त्रों) को बेकार बना दिया है। वह एक बड़ी बात है। अब 'टोटल नॉनवायलेन्स' (परिपूर्ण अहिंसा) और 'टोटल वायलेन्स' (परिपूर्ण हिंसा), इन दोनों के बीच मुकाबला होगा। अब दुनिया के सामने एक ऐसा 'आल्टरनेटिव' खड़ा है कि या तो इसे कबूल करो या उसे।

आज का जमाना पुराने जमाने से कम निठुर

फिलॉसफर्स (तत्त्व-चिंतक) तो हमेशा कुल दुनिया का ही चिंतन करते हैं, आज भी करते हैं और पुराने जमाने में भी करते थे। वे कुल दुनिया को अपने हाथ का गेंद समझते थे और कुल दुनिया पर नजर डालकर अपना तत्त्वज्ञान बनाते थे। इसलिए मैं फिलॉसफर्स की बात नहीं करता हूँ। लेकिन इन दिनों जो पॉलीटिकल थिंकिंग (राजनीतिक चिंतन) चलता है, वह भी पहले से ज्यादा वसी (व्यापक) है और कुल दुनिया पर नजर रखकर चलता है। इसलिए आज दुनिया उतनी निठुर नहीं है, जितनी पुराने जमाने में थी। क्या आज कोई पसंद करेगा कि चोरी करनेवाले के हाथ काटे जायँ ? लेकिन अपने पुराने धर्म-ग्रन्थों में भी लिखा है कि चोर के हाथ काटे जायँ। यह कोई मामूली एडमिनिस्ट्रेटर (राज्य चलानेवाला) की अक्ल नहीं है, बल्कि धर्मग्रंथवालों की अक्ल है। ऐसी चीजें हिंदू, मुसलमान आदि सभीके धर्मग्रन्थों में मिलती हैं। कुरानशरीफ में भी हैं। लेकिन आज कोई भी पसंद नहीं करेगा कि चोर के हाथ काटे जायँ, बल्कि आज यह सोचा जायगा कि चोर के हाथ काटने से उसका सारा बोझ समाज पर पड़ेगा। इसलिए हाथ नहीं काटने चाहिए, बल्कि उनसे काम लेना चाहिए। वह चोरी करना चाहता था याने हाथ से काम नहीं करना चाहता था और थोड़ी-सी मेहनत में ज़िंदगी बसर करना चाहता था। इस तरह आज उसे कोई पसंद नहीं करेगा, लेकिन एक जमाने में 'डिटरेंट' (दहशत) के तौर पर उस सजा को पसन्द किया जाता था।

इसका मतलब यह है कि आज का समाज पुराने समाज से ऊँचा है। उसका चिंतन का स्तर ऊँचा है। मैंने कहा है कि पुराने जमाने के ऊँचे से ऊँचे मनुष्यों से भी हम ऊँचे हैं। यह सब मैं बोल रहा हूँ तो लोगों को लगता होगा कि बाबा क्या-क्या दावे करता है। लेकिन मैं ये दावे शख्सी (व्यक्तिगत) तौर पर नहीं कर रहा हूँ, सारे समाज की बात कर रहा हूँ। छोटा लड़का छोटा होने पर भी बाप के कंधे पर खड़ा है; इसलिए दूर की देखता है। मैं बड़ा नहीं हूँ, पुराने लोग ही बड़े हैं, लेकिन मैं उनके कंधों पर खड़ा हूँ। जो ज्ञान, इल्म उन्होंने हासिल किया, वह मुझे मुफ्त में ही मिल गया। न्यूटन ने गणित में बड़ी-बड़ी खोजें की हैं, लेकिन आज का कॉलेज का मामूली विद्यार्थी न्यूटन से ज्यादा गणित जानता है, क्योंकि जमाना आगे बढ़ा हुआ है। इसीलिए आज के समाज में उतनी निठुरता नहीं है, जितनी पुराने समाज में थी। तलवार लेकर किसी पर प्रहार करने में जो बेरहमी, संगदिली, निठुरता है, वह ऊपर से बम डालने में नहीं है। बम से लाखों लोग मरते हैं, इसीलिए बम डालने का नतीजा खौफनाक है। लेकिन जिसने बम डाला, वह तो एक हुक्म-बरदार है, किसीके हुक्म से काम करता है। उसका दिल उतना निठुर नहीं है, जितना तलवार लेकर हमला करनेवाले का होता है। बम डालने का जो काम होता है, उसके नतीजे खौफनाक होते हैं; लेकिन उसमें जहालत और मूर्खता है, निठुरता नहीं है।

समाज की विवेक-बुद्धि आगे बढ़ी

आज के जमाने में हम बहुत आगे बढ़े हुए हैं और आज की 'स्पिरिच्युअल वैल्यूज़' (आध्यात्मिक मूल्य) पुराने जमाने की 'स्पिरिच्युअल वैल्यूज़' से बहुत आगे बढ़ी हुई है। सभा में द्रौपदी को पूछा जाता है कि क्या पांडवों का उसपर हक है तो 'भीष्म, द्रोण, विदुर भये विस्मित।' याने उस जमाने के महाज्ञानी भी उसका जवाब नहीं दे सके। इतना वह उनके लि कठिन सवाल बन गया। लेकिन इसमें क्या कठिन है ? क्या आज इसमें किसीको कोई शक है कि खाविंद (पति) का औरत पर ऐसा हक नहीं है कि वह उसे बेच सके। लेकिन उस जमाने के महाज्ञानी, बड़े आलिम भी इसका फैसला नहीं दे सके कि क्या

खाविंद अपनी औरत को बेच सकता है ? इस तरह इस जमाने का 'कॉन्शेन्स' (विवेक-बुद्धि) पुराने जमाने के 'कॉन्शेन्स' से आगे बढ़ा हुआ है।

एक सादी-सी बात लीजिये। इंग्लैण्ड ने १५० साल पहले हिंदुस्तान पर हमला किया, उसपर कब्जा कर लिया। इस तरह इंग्लैण्ड हिंदुस्तान को निगल गया। लेकिन वहाँकी जनता ने उसकी कोई खास मुखालिफत नहीं की। मगर अभी इंग्लैण्ड ने इजिप्त पर हमला किया तो वहाँकी जनता ने उसके खिलाफ आवाज उठायी, प्रदर्शन किये और आखिर वहाँकी हुकूमत को वह कदम वापस लेना पड़ा। यह किस्सा बता रहा है कि समाज का 'कॉन्शेन्स' किस तरह आगे बढ़ा हुआ है।

रायशुमारी से फैसला करने में न्याय नहीं

इस हालत में कोई वही पुरानी, रायशुमारी की बात करते हैं तो क्या कहा जाय ! क्या मेरे पाँव की रायशुमारी की जाय और उससे पूछा जाय कि पाँव ! तेरे फोड़े का क्या किया जाय ? आखिर जिनका इसके साथ ताल्लुक है, उन सबकी रायशुमारी लेनी चाहिए। इसमें और एक बात यह है कि ५२ प्रतिशत लोग एक बाजू और ४८ प्रतिशत दूसरी बाजू हों तो ५२ वालों की राय ४८ वालों पर लादना क्या न्याय, इन्साफ है ? कसरत राय (बहुमत) से फैसला करने की बात बहुत ही 'क्रूड' (भद्दी) है। आज की 'डेमोक्रेसी' (लोकशाही) इतनी फॉर्मल (औपचारिक) है कि उसमें सिर्फ सिरों की गिनती की जाती है, सिरों के अंदर जो माद्दा भरा है, उसको नहीं नापा जाता है ! सोचने की बात है कि जहाँ आप संसार के नसीब की बात सोच रहे हैं, वहाँ केवल एक 'मेकेनिकल प्रोसेस' (यांत्रिक प्रक्रिया) नहीं हो सकता है। इसलिए ऐसे मसले पुराने ढंग से हरगिज हल नहीं हो सकते।

सब मसले एक ही दिन हल होंगे

आज मन से मन टकराता है, इसलिए सब मसले 'इन सस्पेन्स' (लटकते) ही रहेंगे। आज पाकिस्तान अमेरिका के इशारे के बिना हिंदुस्तान पर हमला करे, यह नामुमकिन है और अगर अमेरिका चाहेगा तो पाकिस्तान हमला करेगा, तब तो विश्व-युद्ध ही होगा। इस हालत में छोटी नजर से सोचने से मसले हल नहीं होंगे। विज्ञान के जमाने में हम बहुत नजदीक आ रहे हैं। इसलिए यह नहीं हो सकता कि हम कोई मसला 'आइसोलेटेड्' (अलग से) हल कर सकें। इसलिए ये सारे मसले 'इन सस्पेन्स' रहेंगे और फिर होली का, पूनम का दिन आयेगा, तब सारे कागजात जलाये जायँगे ! कश्मीर के मसले के कागजात, गोवा के, तिब्बत के मसले के, कुल के कुल मसलों के कागजात एकदम जलाये जायँगे और उन कागजात को आग लगानेवाले जो लोग होंगे, वे 'सुप्रामेंटल लेवल' (अतिमानस भूमिका) पर सोचनेवाले होंगे। 'मेंटल लेवल' (मन की भूमिका) पर सोचनेवाले समस्याओं का हल नहीं कर सकेंगे।

रूहानियत : जमाने की माँग

गांधीजी के जमाने का सत्याग्रह भी अब पिछड़ गया है। उस सत्याग्रह में यह बात थी कि सामनेवाला यह देखेगा कि मेरी आँखों में कितना प्यार है, मेरी जबान में कितना प्यार है। वह मेरी आँख देखेगा, शक्ल देखेगा, जबान सुनेगा और जैसे नारद ने वाल्मीकि का दिल बदला, वैसे मैं उसके दिल पर असर करूँगा। यह सत्याग्रह का पुराना ढंग था। अब इस जमाने में जिसके खिलाफ सत्याग्रह करना है, वह मुझे देखता ही नहीं, मेरी जबान सुन नहीं पाता है, इसलिए पुराने जमाने का सत्याग्रह अब पिछड़ गया है। अब हमें सत्याग्रह की ऐसी युक्ति हासिल होनी चाहिए, जो इस जमाने में काम दे सके। इन दिनों 'इन्टर कॉंटिनेंटल बैलीस्टिक मिसिली' का ईजाद हुआ है। उसमें जैसे वह एक जगह बैठकर सारी दुनिया को आग लगा सकता है, वैसे ही एक जगह बैठकर सारी दुनिया में शांति कायम करने की, दुनिया को बचाने की तरकीब हमें ढूँढ़नी चाहिए। वह एक जगह बैठकर 'कंट्रोल्ड मिसिली' भेज सकता है। उसे कहेगा कि 'न्यूयार्क या वॉशिंग्टन पर जाकर गिरो' तो वह 'मिसिली' वहाँ जाकर ठीक उसी 'एंगल' (कोण) में हुक्म के मुताबिक गिरेगी। इस तरह घर बैठे दुनिया को आग लगाने की ताकत विज्ञान ने ईजाद की है, वहाँ आपको ऐसी ताकत ढूँढनी चाहिए कि घर बैठे दुनिया को मुतस्सिर (प्रभावित) कर सके, दुनिया में शांति कायम कर सके। वह ताकत 'स्पिरिच्युअल' (आध्यात्मिक) के सिवाय दूसरी कोई नहीं हो सकती है। इसलिए 'स्पिरिच्युअलिटी,' रूहानियत (आध्यात्मिकता) इस जमाने की माँग है, उसके बिना नजात (मुक्ति) मुमकिन नहीं है। मैं जाती नजात (व्यक्तिगत मुक्ति) की ही नहीं, बल्कि सारे समाज की नजात की बात करता हूँ। इसीलिए मैं कहता हूँ कि पुराने जमाने में हम किसी एक विषय पर जज़्बा (भावना) पैदा करते चले जाते थे। उस पुरानी 'मेंटल' (मन की) भूमिका पर काम करने से कोई मसला हल नहीं होगा। इसलिए अब हमें अपने भारत की पुरानी कूवत, ताकत, जो रूहानियत में है, उसे बाहर लाना होगा। उसी ताकत से कश्मीर के, हिन्दुस्तान के और दुनिया के मसले हल होंगे।

मैंने आपके सामने (पहले चार प्रवचनों में) जो चार बातें रखीं, उनके मूल में हमारा भारतीय चिंतन है, जिसमें ब्रह्मविद्या आती है। मैंने आपको चार बातें बतायी थीं, जिनमें पहली बात यह थी कि राजनीति की जगह लोकनीति चले। 'इन्डायरेक्ट डेमोक्रेसी' की जगह 'डायरेक्ट डेमोक्रेसी', 'पीपल्स डेमोक्रेसी' चले। दूसरी बात यह थी कि हवा, पानी और सूरज की रोशनी के जैसे जमीन भी सबके लिए है, उसकी मालकियत नहीं हो सकती है। तीसरी बात यह थी कि आपको शांति-सेना कायम करनी होगी, मर मिटने के लिए राजी होना होगा। [चालू]

अनुक्रम

१. रूहानियत और ब्रह्मविद्या से ही समस्याओं का हल होगा
श्रीनगर ३ अगस्त '५९ पृष्ठ ६०९

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी